

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

अखंड पंचाक्षरी जाप साधना

एक दिवसीय पारिवारिक चेतना जागरण अभियान

आत्मजागरण • नकारात्मकता मुक्ति • युवा सशक्तिकरण • राष्ट्र चेतना



कबीर जी महाराज के नेतृत्व में

विचार से व्यवस्था तक



kabeerjimaharaj.com •



+91-6394480317



समर्पण

समर्पण

◆ ॐ ◆

यह पुस्तक समर्पित है —

उस चेतना को
जो मनुष्य को पशुता से मानवता की ओर,
मानवता से देवत्व की ओर,
और देवत्व से परमात्मा की ओर ले जाती है।

समर्पित है —

माँ सरस्वती की कृपा को,
भगवान शिव की करुणा को,
ऋषियों की तपस्या को,
और उन सभी साधकों को
जो स्वयं के परिवर्तन के माध्यम से
समाज और राष्ट्र के परिवर्तन का स्वप्न देखते हैं।

◆ ॐ ◆



श्री गणेश वंदना



**वक्रतुण्ड महाकाय
सूर्यकोटि समप्रभ ।**

**निर्विघ्नं कुरु मे देव
सर्वकार्येषु सर्वदा ॥**



सृष्टि के प्रत्येक शुभ कार्य का आरम्भ श्री गणेश के स्मरण से होता है। गणपति केवल एक देवता नहीं हैं। वे विवेक के प्रतीक हैं। वे निर्णय शक्ति के प्रतीक हैं। वे बुद्धि और संतुलन के प्रतीक हैं।

आज मानव जीवन में सबसे बड़ी समस्या संसाधनों की कमी नहीं, बल्कि सही निर्णय लेने की क्षमता का अभाव है। इसलिए साधना की यात्रा का प्रथम चरण है —

विवेक का जागरण

हम भगवान गणेश से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे जीवन के बाहरी और भीतरी विघ्नों का नाश करें और हमें साधना के मार्ग पर स्थिर रखें।

श्री गणेश वंदना (पाठ)

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अगाजाननं पद्मार्कं गजाननं अहर्निशम् ।
अनेकदन्तं भक्तानाम् एकदन्तं उपास्महे ॥
गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥
एकदन्तं महाकायं लंबोदरं गजाननम् ।
विघ्ननाशकं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम् ॥
सिद्धिविनायकं देवं वक्रतुण्डं महाबलम् ।
भक्तानां वरदं नित्यं एतं स्मरामि विनायकम् ॥
गणाधिपाय नमो नमः गणपतये नमो नमः ।
विघ्नराजाय नमो नमः बुद्धिप्रदाय नमो नमः ॥
ॐ गं गणपतये नमः ॥





माँ सरस्वती वंदना

◆ ॐ ◆

सरस्वती वंदना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मवासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥२॥



संक्षिप्त विवचन

यह वंदना माँ सरस्वती को ज्ञान, बुद्धि, विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी के रूप में नमन करती है।
यह प्रार्थना हमारी बुद्धि को निर्मल, वाणी को मधुर और जीवन को ज्ञानमय बनाने की प्रेरणा देती है।
माँ से विनती है कि वे हमारे समस्त अज्ञान और जड़ता को दूर करें तथा हमें सत्य, सदाचार और
विद्या के मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

भावार्थ

माँ सरस्वती श्वेत वसन धारण करने वाली, वीणा, पुस्तक और माला से सुशोभित, श्वेत कमल पर विराजमान हैं।
ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवता भी जिनकी नित्य वंदना करते हैं, ऐसी जगदांबा मुझ पर कृपा करें और
मेरे समस्त अज्ञाना का नाश करें।
वे बुद्धि, ज्ञान, वाणी और विवेक देने वाली परमेश्वरी हैं, जिनकी शरण से जीवन में प्रकाश आता है।

इस वंदना का फल

विद्या और अध्ययन
में सफलता

बुद्धि, विवेक और
स्मरणशक्ति में वृद्धि

वाणी की शुद्धि और
प्रभावशीलता

अज्ञान, आलस्य और जड़ता
का नाश

महामृत्युंजय मंत्र

◆ ॐ ◆

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे
सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्
मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥



यह मंत्र केवल मृत्यु से रक्षा का मंत्र नहीं है।

- ◆ यह भय से मुक्ति का मंत्र है।
- ◆ यह अशुद्धता से मुक्ति का मंत्र है।
- ◆ यह मानसिक दुर्बलता से मुक्ति का मंत्र है।

आज मनुष्य मृत्यु से कम, भय से अधिक पीड़ित है —

- ◆ भविष्य का भय,
- ◆ असफलता का भय,
- ◆ समाज का भय,
- ◆ अकेलेपन का भय।

महामृत्युंजय मंत्र हमें भीतर की अमर चेतना का स्मरण कराता है।

कबीर जी महाराज

चेतना जागरण के अग्रदूत

◆ ॐ ◆

कुछ लोग व्यवस्था को बदलने का प्रयास करते हैं।
कुछ लोग विचारों को बदलने का प्रयास करते हैं।
कबीर जी महाराज का मानना है कि व्यवस्था का परिवर्तन
विचारों के परिवर्तन से ही संभव है।

इसलिए उनका सूत्र है —

विचार से व्यवस्था तक

आधुनिक प्रबंधन, तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, संगठन निर्माण
और रणनीतिक परामर्श की गहरी समझ रखने वाले कबीर जी महाराज
ने अपने जीवन को चेतना जागरण के लिए समर्पित किया है।

उनका मानना है कि मानवता का सबसे बड़ा संकट आर्थिक नहीं,
बल्कि चेतना का संकट है।

कबीर जी महाराज का संदेश



यदि मनुष्य अपने भीतर की शक्ति
को पहचान ले,
तो जीवन बदल सकता है।



यदि परिवार अपनी चेतना
को जागृत कर लें,
तो समाज बदल सकता है।



यदि समाज जागृत हो जाए,
तो राष्ट्र बदल सकता है।

इसी उद्देश्य से **अखंड पंचाक्षरी** जाप साधना का अभियान प्रारम्भ किया गया।

- ◆ यह केवल धार्मिक कार्यक्रम नहीं है।
- ◆ यह आत्मजागरण का अभियान है।
- ◆ यह सकारात्मकता का अभियान है।
- ◆ यह युवा शक्ति को दिशा देने का अभियान है।
- ◆ यह परिवारों को पुनः आध्यात्मिक ऊर्जा से जोड़ने का अभियान है।



आज का सबसे बड़ा संकट

आज मानवता के पास सब कुछ है —

- ◆ सुविधाएँ हैं।
- ◆ प्रौद्योगिकी है।
- ◆ मोबाइल और इंटरनेट है।
- ◆ कृत्रिम बुद्धिमत्ता है।

फिर भी —

- ◆ मन अशांत है।
- ◆ तनाव बढ़ रहा है।
- ◆ अवसाद बढ़ रहा है।
- ◆ नशा बढ़ रहा है।
- ◆ परिवार टूट रहे हैं।
- ◆ युवा दिशा खो रहे हैं।

कारण क्या है?



**मनुष्य ने बाहरी विकास तो किया,
किंतु भीतरी विकास को भूल गया।**

आत्मजागरण क्यों?

आत्मजागरण का अर्थ है —

- ◆ स्वयं को पहचानना।
- ◆ अपने विचारों को समझना।
- ◆ अपने जीवन का उद्देश्य जानना।
- ◆ अपनी चेतना को जागृत करना।



चेतना जागरण

- ◆ अपनी चेतना को जागृत करना।

जब तक मनुष्य स्वयं को नहीं समझता, तब तक वह संसार को नहीं समझ सकता।

अखंड पंचाक्षरी जाप साधना का पहला उद्देश्य है — मनुष्य को स्वयं से मिलाना।
क्योंकि जो स्वयं से जुड़ जाता है, वह जीवन से नहीं भटकता।



नकारात्मकता की जड़ कहाँ है?



अधिकांश लोग मानते हैं कि उनकी समस्याओं का कारण बाहरी परिस्थितियाँ हैं।
 “परिस्थितियाँ ठीक नहीं हैं।”
 “लोग अच्छे नहीं हैं।”
 “समय खराब चल रहा है।”

किन्तु सत्य यह है कि मनुष्य को परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि परिस्थितियों के प्रति उसके विचार प्रभावित करते हैं।

दो व्यक्ति एक ही घटना का सामना करते हैं। एक टूट जाता है। दूसरा और मजबूत बन जाता है। घटना समान थी — परिणाम अलग क्यों हुआ? क्योंकि विचार अलग थे।

नकारात्मकता बाहर नहीं होती। नकारात्मकता भीतर जन्म लेती है —

- ◆ जब भय बढ़ता है,
- ◆ जब असुरक्षा बढ़ती है,
- ◆ जब तुलना बढ़ती है,
- ◆ जब अपेक्षाएँ बढ़ती हैं।



नकारात्मकता का पहला शिकार मनुष्य स्वयं बनता है। फिर उसका परिवार। फिर समाज।

इसलिए चेतना जागरण का पहला कदम है — विचारों की शुद्धि।
विचार ही भाग्य का निर्माण करते हैं

“सूद्रावं तद्भवति”

जैसा भाव, वैसा निर्माण।

आज आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है कि हमारे विचार हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं। व्यवहार हमारे निर्णयों को प्रभावित करता है। निर्णय हमारा भविष्य बनाते हैं।

“ विचार बदलो, अवस्था बदल जाएगी। ”

— कबीर जी महाराज



शुद्ध विचार
शुद्ध जीवन



सकारात्मक सोच
सफलता की ओर



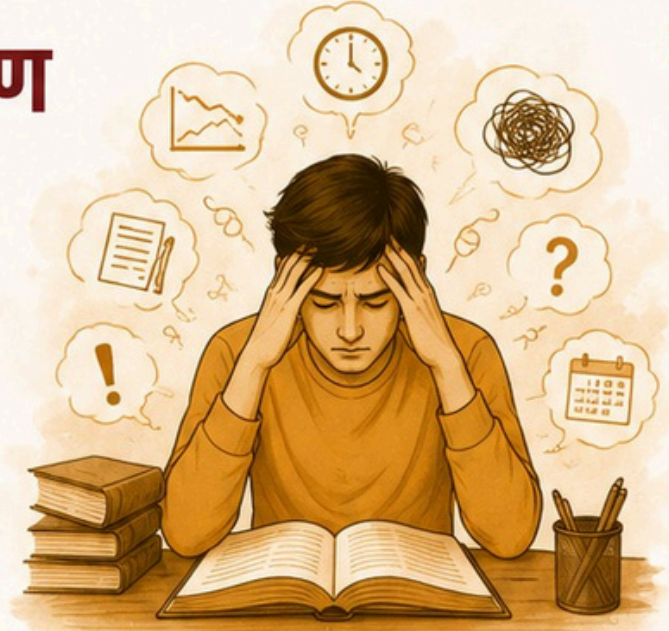
विचारों की शुद्धि
चेतना की सिद्धि



ज्ञान से जागरण
जीवन से निर्माण

तनाव का वास्तविक कारण

आज संसार में करोड़ों लोग तनाव से पीड़ित हैं। लेकिन तनाव का कारण काम नहीं है — तनाव का कारण विचार हैं।



काम थकाता है। विचार तोड़ते हैं।



कई लोग दिन भर कार्य करते हैं, फिर भी प्रसन्न रहते हैं।
कई लोग बिना कार्य के भी तनावग्रस्त रहते हैं।



मन जब अतीत में फँसता है → पछतावा पैदा होता है।
मन जब भविष्य में भटकता है → चिंता पैदा होती है।
मन जब वर्तमान में स्थिर होता है → शांति उत्पन्न होती है।



जाप का मूल उद्देश्य है —

मन को वर्तमान में स्थापित करना।

युवा क्यों भटक रहे हैं?

युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी होती है। किन्तु आज का युवा अनेक चुनौतियों से घिरा हुआ है —



♦ अत्यधिक सूचना और सोशल मीडिया



♦ तुलना और भोगवाद

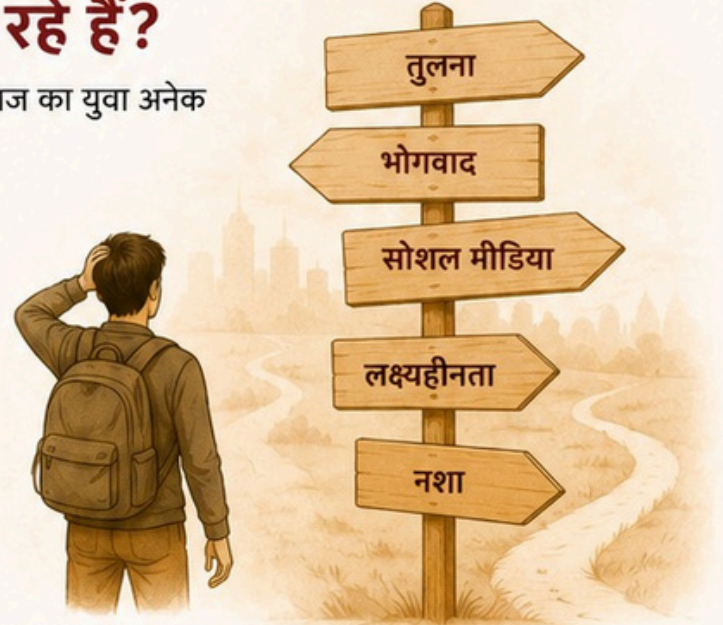


♦ नशा और डिजिटल व्यसन



♦ लक्ष्यहीनता

आज का युवा प्रतिभाशाली है, किन्तु अस्थिर ही जानकारी है,
किन्तु दिशाहीन है। साधन हैं, किन्तु केंद्रित नहीं है।



उसे केवल रोजगार नहीं चाहिए — उसे दिशा चाहिए।



उसे केवल सफलता नहीं चाहिए — उसे उद्देश्य चाहिए।



यही उद्देश्य साधना प्रदान करती है।



साधना क्यों आवश्यक है?

साधना का अर्थ संसार छोड़ना नहीं है। साधना का अर्थ है — स्वयं को व्यवस्थित करना।



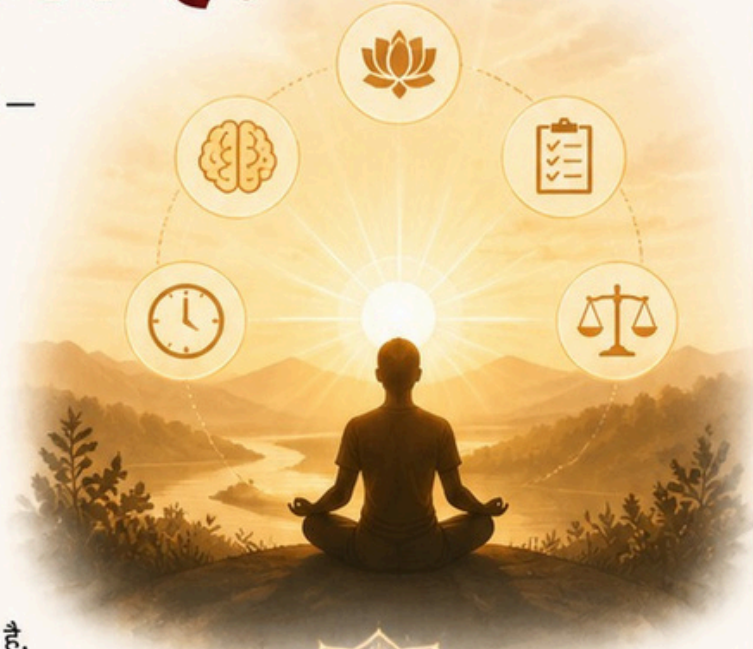
मन को व्यवस्थित करना।



विचारों को व्यवस्थित करना।



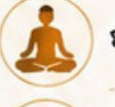
जीवन को व्यवस्थित करना।



जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है, उसी प्रकार मन को स्वस्थ रखने के लिए साधना आवश्यक है।



जाप मन का व्यायाम है।



ध्यान मन का विश्राम है।



और जागरूकता मन का विकास है।

जाप मन का व्यायाम है —
मन को वर्तमान में स्थापित करना।

मंत्र क्या है?

“मननात् त्रायते इति मन्त्रः”

जिसका मनन करने से मनुष्य की रक्षा हो, वह मंत्र है।



मंत्र केवल शब्द नहीं है।

मंत्र चेतना की विशेष ध्वनियों हैं।



प्रत्येक मंत्र का अपना एक कंपन क्षेत्र (Vibrational Field) होता है।



जब साधक नियमित रूप से मंत्र का जाप करता है, तो उसका मन धीरे-धीरे उसी ऊर्जा के अनुरूप होने लगता है।



मंत्र हमारे भीतर की बिखरी हुई शक्ति को केंद्रित करता है। इसलिए सनातन परंपरा में मंत्र को आध्यात्मिक विज्ञान का आधार माना गया है।

ध्वनि और ब्रह्मांड

आधुनिक विज्ञान के अनुसार सम्पूर्ण ब्रह्मांड ऊर्जा और कंपन से निर्मित है। जो कुछ भी दिखाई देता है, वह ऊर्जा का एक स्वरूप है।



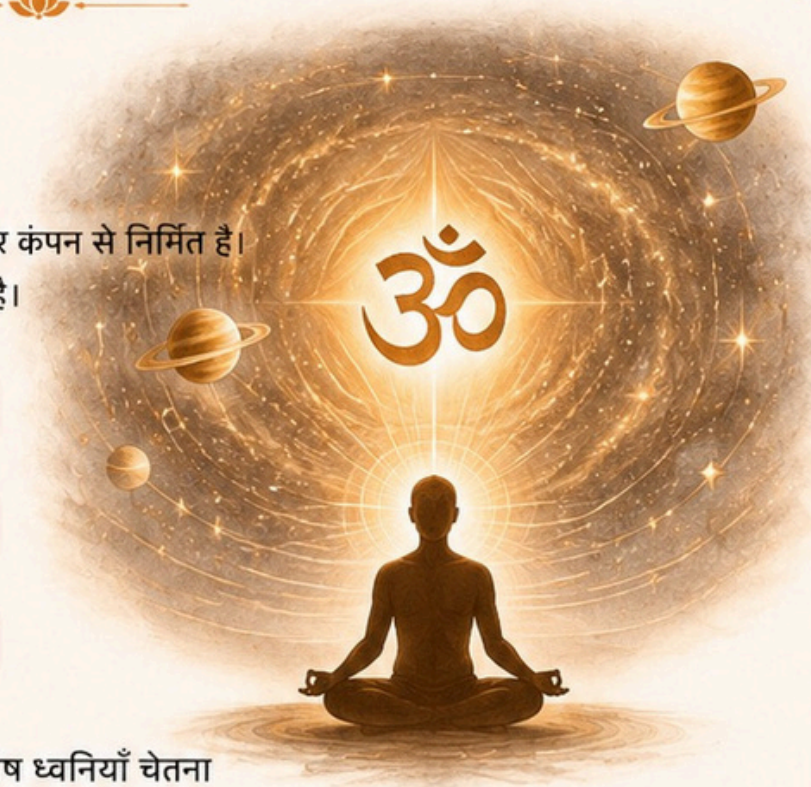
• ध्वनि भी ऊर्जा है।



• हमारे शब्द भी ऊर्जा हैं।



• हमारे विचार भी ऊर्जा हैं।



ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व अनुभव किया था कि विशेष ध्वनियाँ चेतना को प्रभावित करती हैं। इसी अनुभव से मंत्र विज्ञान का जन्म हुआ।

जब हजारों लोग मिलकर एक ही मंत्र का जप करते हैं, तो सामूहिक ऊर्जा का एक विशेष क्षेत्र निर्मित होता है। इसलिए सामूहिक जाप को विशेष महत्व दिया गया है।



ॐ – सृष्टि की आदिध्वनि

ॐ कोई साधारण शब्द नहीं है। सनातन परंपरा में इसे प्रणव कहा गया है। यह सम्पूर्ण सृष्टि का बीज स्वर माना गया है।



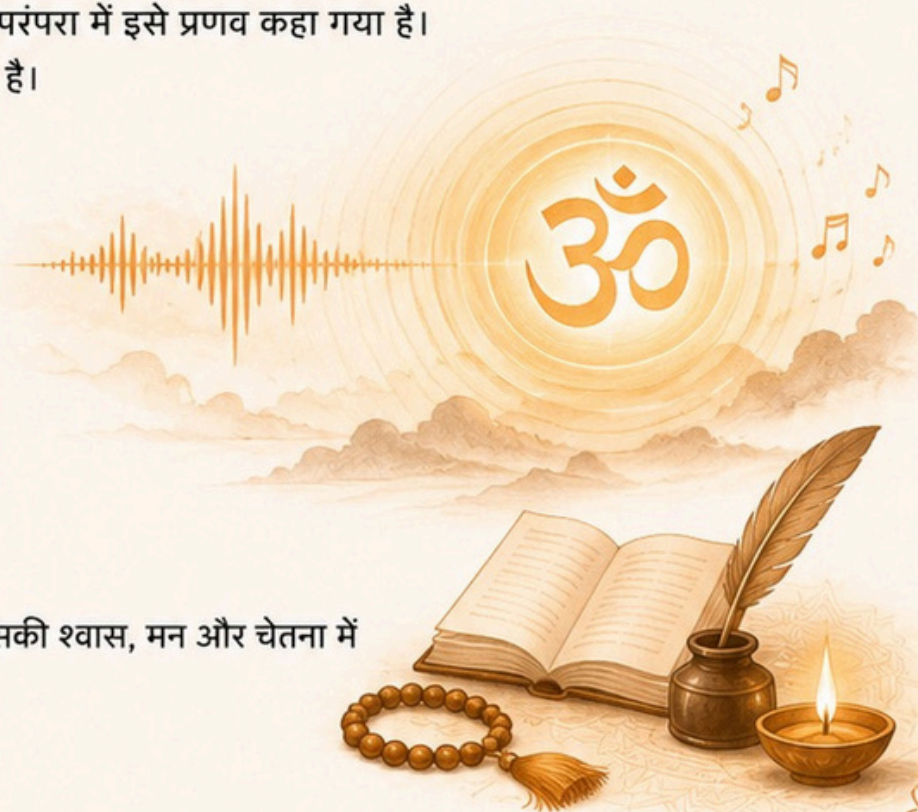
अ – सृजन



उ – पालन



म – परिवर्तन



इन तीन ध्वनियों का समन्वय है – ॐ।

जब साधक ॐ का उच्चारण करता है, तो उसकी श्वास, मन और चेतना में एक विशेष सामंजस्य उत्पन्न होने लगता है।

पंचाक्षरी मंत्र का रहस्य

ॐ नमः शिवाय

पाँच अक्षरों का यह मंत्र पंचतत्वों से जुड़ा माना गया है —

न	— पृथ्वी		स्थिरता, धैर्य और आधार का प्रतीक।
म	— जल		शुद्धि, भावनाओं और प्रवाह का प्रतीक।
शि	— अग्नि		ऊर्जा, तेज और परिवर्तन का प्रतीक।
वा	— वायु		प्राणशक्ति, गति और जीवन का प्रतीक।
य	— आकाश		विस्तार, शून्यता और चेतना का प्रतीक।



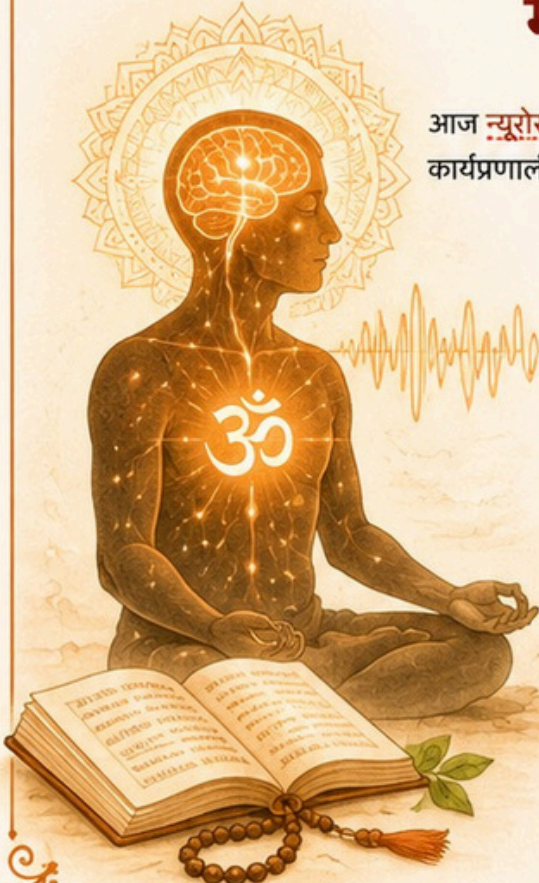
मनुष्य का शरीर भी इन्हीं तत्वों से बना है। प्रकृति भी इन्हीं तत्वों से बनी है। जब साधक **पंचाक्षरी** मंत्र का जप करता है, तो वह स्वयं को प्रकृति की मूल लय से जोड़ने का प्रयास करता है।

मंत्र और मस्तिष्क

आज **न्यूरोसाइंस** यह स्वीकार करती है कि नियमित ध्यान और जप मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकते हैं।

नियमित साधना से —

-  एकाग्रता बढ़ती है।
-  भावनात्मक संतुलन बेहतर होता है।
-  तनाव कम होता है।
-  आत्मविश्वास बढ़ता है।
-  निर्णय क्षमता विकसित होती है।



पंचाक्षरी मंत्र का रहस्य

ॐ **ॐ नमः शिवाय** ॐ

पाँच अक्षरों का यह मंत्र पंचतत्त्वों से जुड़ा माना गया है —

न	— पृथ्वी		स्थिरता, धैर्य और आधार का प्रतीक।
म	— जल		शुद्धि, भावनाओं और प्रवाह का प्रतीक।
शि	— अग्नि		ऊर्जा, तेज और परिवर्तन का प्रतीक।
वा	— वायु		प्राणशक्ति, गति और जीवन का प्रतीक।
य	— आकाश		विस्तार, शून्यता और चेतना का प्रतीक।



मनुष्य का शरीर भी इन्हीं तत्वों से बना है। प्रकृति भी इन्हीं तत्वों से बनी है। जब साधक **पंचाक्षरी** मंत्र का जाप करता है, तो वह स्वयं को प्रकृति की मूल लय से जोड़ने का प्रयास करता है।

मंत्र और मस्तिष्क

आज **न्यूरोसाइंस** यह स्वीकार करती है कि नियमित ध्यान और जप मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकते हैं।

नियमित साधना से —

-  एकाग्रता बढ़ती है।
-  भावनात्मक संतुलन बेहतर होता है।
-  तनाव कम होता है।
-  आत्मविश्वास बढ़ता है।
-  निर्णय क्षमता विकसित होती है।



यही कारण है कि अखंड **पंचाक्षरी** जाप साधना केवल धार्मिक अभ्यास नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास का माध्यम है।

वाणी के चार स्तर

जप की आंतरिक यात्रा

सनातन परंपरा में वाणी को केवल बोलने का माध्यम नहीं माना गया है। ऋषियों ने वाणी के चार स्तर बताए हैं —

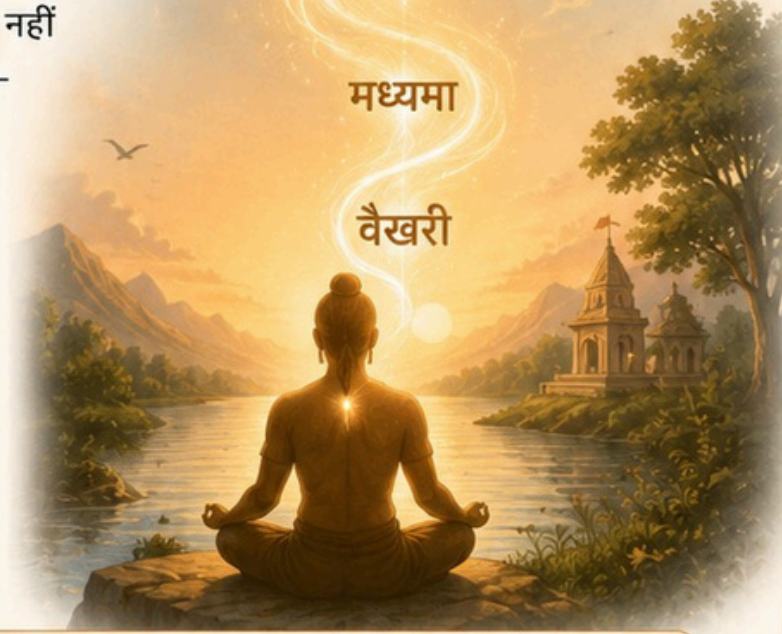
परा

पश्यन्ती

मध्यमा

वैखरी

1. वैखरी 
2. मध्यमा 
3. पश्यन्ती 
4. परा 



अधिकांश लोग केवल वैखरी वाणी तक सीमित रहते हैं। किन्तु साधना का उद्देश्य मनुष्य को वाणी के गहरे स्तरों तक ले जाना है।

अखंड पंचाक्षरी जप साधना यह वाणी की यात्रा है —

- ॐ शब्द से मौन तक की यात्रा।
- ॐ ध्वनि से चेतना तक की यात्रा।
- ॐ व्यक्ति से शिव तक की यात्रा।







वैखरी वाणी

साधना का प्रथम चरण

जब हम स्पष्ट रूप से बोलकर मंत्र का जप करते हैं, उसे वैखरी वाणी कहते हैं। यही साधना का प्रारंभिक स्तर है।

ॐ नमः शिवाय

इस अवस्था में —

-  जीभ सक्रिय होती है।
-  कान सुनते हैं।
-  मन बार-बार भटकता है।
-  फिर वापस मंत्र में लाया जाता है।

वेखरी जप का उद्देश्य है — मन को मंत्र के साथ जोड़ना। शुरुआत में साधक को ऊँचे स्वर में या स्पष्ट स्वर में जप करना चाहिए। इससे मनन की चंचलता कम होती है।






मध्यम वाणी

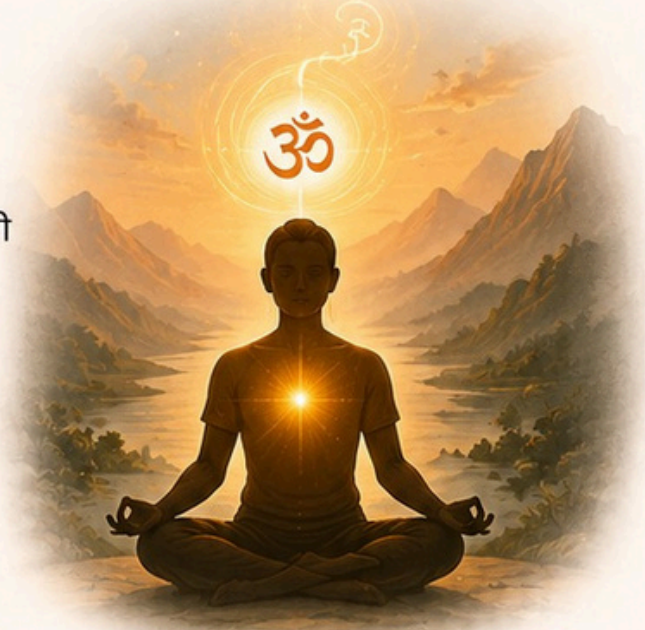
जब मंत्र भीतर उतरने लगता है

जब साधक नियमित अभ्यास करता है, तो धीरे-धीरे मंत्र बाहरी ध्वनि से आंतरिक ध्वनि में बदलने लगता है।

अब होंठ नहीं हिलते। आवाज़ नहीं निकलती।
किन्तु मंत्र भीतर चलता रहता है। यही मध्यम वाणी है।

इस अवस्था में —

-  मन अधिक स्थिर होने लगता है।
-  श्वास संतुलित होने लगती है।
-  भावनाएँ शांत होने लगती हैं।



साधक अनुभव करता है कि मंत्र अब उसके द्वारा नहीं, बल्कि उसके भीतर स्वयं चल रहा है।




पश्यन्ती वाणी

जब मंत्र दिखाई देने लगता है

"पश्यन्ती" का अर्थ है — जो देखी जा सके। यह साधना का अत्यंत सूक्ष्म स्तर है। यहाँ मंत्र शब्द नहीं रह जाता — वह अनुभव बन जाता है। ध्वनि नहीं रहती, किन्तु उपस्थिति रहती है।

साधक अनुभव करता है — मानो सम्पूर्ण अस्तित्व में वही मंत्र प्रवाहित हो रहा है। यह अवस्था गहन एकाग्रता, श्रद्धा और निरंतर अभ्यास से प्राप्त होती है।

इस अवस्था में —

-  एकाग्रता गहन होने लगती है।
-  शब्द नहीं, अनुभव ही मंत्र बन जाता है।
-  मानो सम्पूर्ण अस्तित्व में वही मंत्र प्रवाहित हो रहा है।



यह अवस्था गहन एकाग्रता, श्रद्धा और निरंतर अभ्यास से प्राप्त होती है।



परा वाणी

शब्द से परे की अवस्था

परा वाणी वाणी का सर्वोच्च स्तर है। यहाँ शब्द समाप्त हो जाते हैं।
मौन प्रारम्भ होता है।

-  यहाँ जप नहीं होता — जप घटित होता है।
-  यहाँ साधक और मंत्र का भेद मिटने लगता है।
-  यहाँ केवल चेतना रहती है।
-  केवल अनुभव रहता है।
-  केवल शिवत्व रहता है।



ऋषियों ने इसी अवस्था को आत्मज्ञान की दहलीज कहा है।

जप की वास्तविक सफलता

बहुत लोग पूछते हैं — कितनी माला करनी चाहिए? कितने घंटे जप करना चाहिए?
कितनी संख्या पूरी करनी चाहिए?

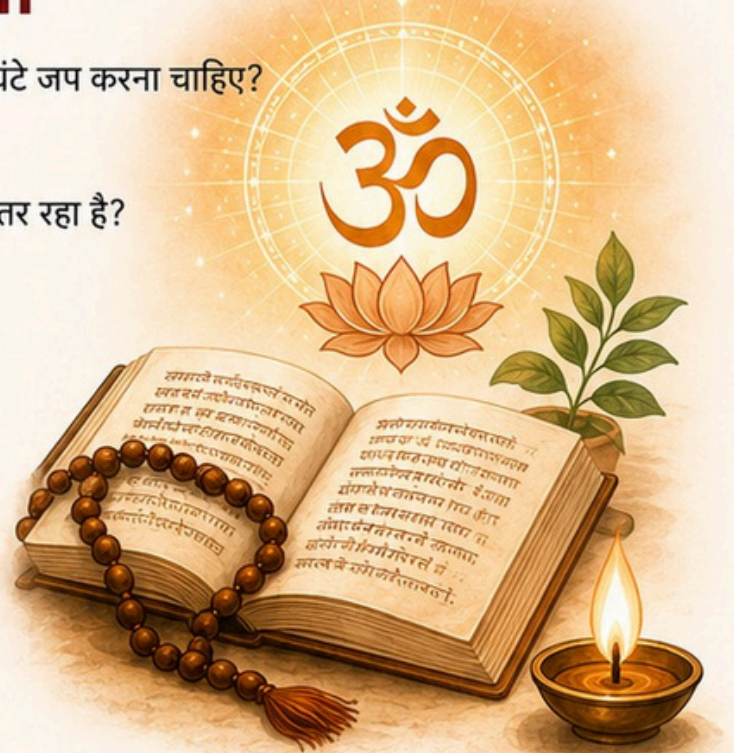
किन्तु वास्तविक प्रश्न यह है — क्या मंत्र आपके जीवन में उतर रहा है?

यदि जप के बाद भी —

-  क्रोध वैसा ही है,
-  अहंकार वैसा ही है,
-  ईर्ष्या वैसी ही है,

तो जप अभी केवल शब्द है।

जब जप व्यवहार में उतरता है — तभी वह साधना बनता है।



शिव कौन हैं?



शिव कोई सीमित व्यक्तित्व नहीं हैं।



शिव चेतना हैं।



शिव शांति हैं।



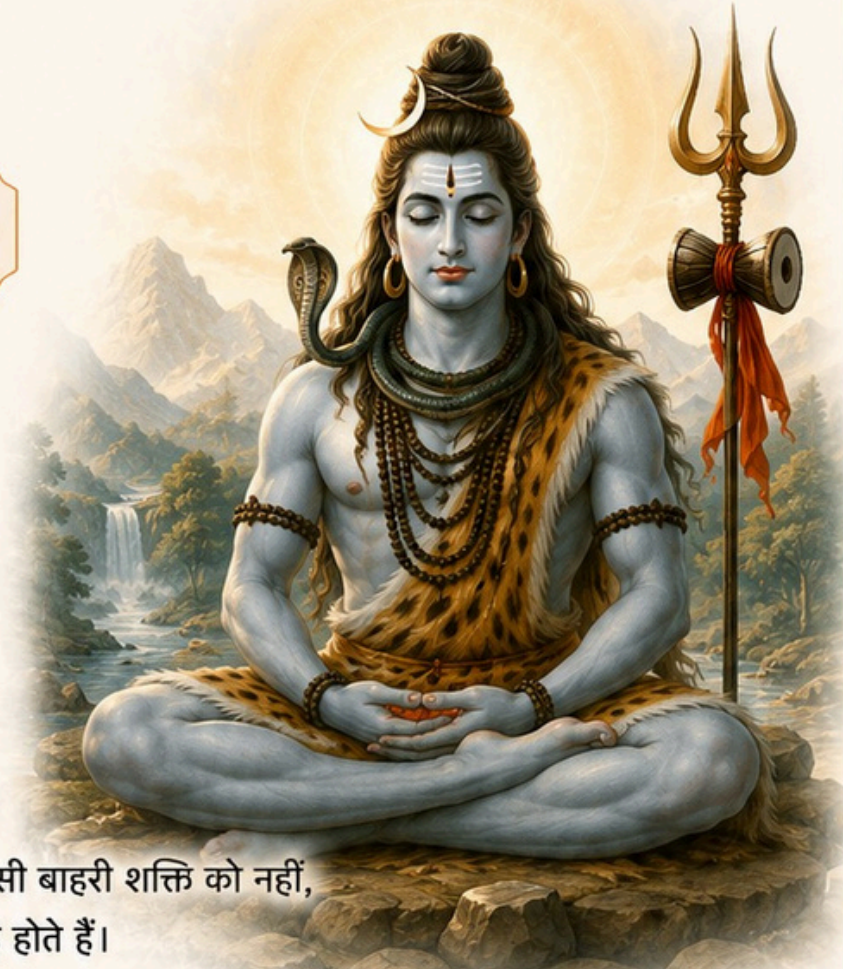
शिव संतुलन हैं।



शिव करुणा हैं।



शिव परिवर्तन हैं।



जब हम "ॐ नमः शिवाय" कहते हैं, तो हम किसी बाहरी शक्ति को नहीं, अपने भीतर स्थित शिव तत्व को प्रणाम कर रहे होते हैं।

यही इस मंत्र का सबसे गहरा रहस्य है।

अखंड पंचाक्षरी जप क्यों?

क्योंकि मनुष्य को —



केवल जानकारी नहीं, अनुभूति चाहिए।



केवल सफलता नहीं, शांति चाहिए।



केवल उपलब्धि नहीं, अर्थ चाहिए।

अखंड जप मनुष्य को उसकी मूल चेतना से जोड़ता है। यह उसे स्वयं से मिलाता है। यह उसे सकारामकता प्रदान करता है। यह उसे दिशा देता है।

ॐ नमः
शिवाय



और यही दिशा जीवन को बदल देती है।

एक दिवसीय अखंड पंचाक्षरी जाप साधना

अभियान का उद्देश्य

यह अभियान किसी एक व्यक्ति, संस्था, समुदाय या समूह तक सीमित नहीं है।



यह प्रत्येक परिवार के लिए है।

- ❖ प्रत्येक गाँव के लिए है।
- ❖ प्रत्येक नगर के लिए है।



उद्देश्य है —

- ❖ हर घर में शिव नामा।
- ❖ हर मन में शिव भाव।
- ❖ हर परिवार में साधना।
- ❖ हर समाज में सकारात्मकता।



परिवार में आयोजन कैसे करें?

अखंड पंचाक्षरी जाप साधना का आयोजन अत्यंत सरल है —



एक स्वच्छ स्थान चुनें।



भगवान शिव का चित्र या शिवलिंग स्थापित करें।



दीप प्रज्वलित करें।



संकल्प लें।



परिवार के सदस्य **समयानुसार** जाप प्रारम्भ करें।



यदि परिवार छोटा है, तो मित्रों, पड़ोसियों और परिचितों को जोड़ें।

उद्देश्य संख्या नहीं, निरंतरता है।

एकदिवसीय साधना मॉडेल

- 1 प्रातः कालीन — संकल्प
- 2 — महाराज जी के साथ आरती वंदना
- 3 — महाराज जी का उद्घोषण एवं अखंड जाप का महत्व
- 3 — महाराज जी के साथ जाप साधना एवं ध्यान प्रयोग
- 4 — सम्पूर्ण परिवार के साथ जाप साधना
- 5 — संगीतमय जाप
- 6 — मिलने वालों के साथ जाप साधना
- 7 — रात्रि विश्राम से पहले संकल्प एवं कलश विस्थापन
- 8 — रात्रि गहन निद्रा जाप का भाव एवं सतत जाप



इस प्रकार पूरे २४ घंटे तक —

ॐ नमः शिवाय

का अखंड प्रवाह चलता रहे।



परिवार की भूमिका

- परिवार केवल रक्त संबंध नहीं है। परिवार ऊर्जा का केंद्र है।
- यदि परिवार में सकारात्मकता होगी, तो समाज में सकारात्मकता होगी।
- अखंड पंचाक्षरी जाप साधना परिवार को पुनः एक सूत्र में जोड़ती है — जहाँ लोग साथ बैठते हैं, साथ जप करते हैं, साथ प्रार्थना करते हैं, साथ संकल्प लेते हैं।
- वहीं से परिवर्तन प्रारंभ होता है।

परिवार में आयोजन कैसे करें?

- अखंड पंचाक्षरी जाप साधना का आयोजन अत्यंत सरल है —
- एक स्वच्छ स्थान चुनें।
 - भगवान शिव का चित्र या शिवलिंग स्थापित करें।
 - दीप प्रज्वलित करें।
 - संकल्प लें।
 - परिवार के सदस्य समयानुसार जाप प्रारंभ करें।
- यदि परिवार छोटा है, तो मित्रों, पड़ोसियों और परिचितों को जोड़ें।

उद्देश्य संख्या नहीं, निरंतरता है।

युवा शक्ति का जागरण

आज का युवा उर्जा से भरपूर है। आवश्यकता केवल दिशा की है।

जाप युवाओं को —



एकाग्रता देता है।



अनुशासन देता है।



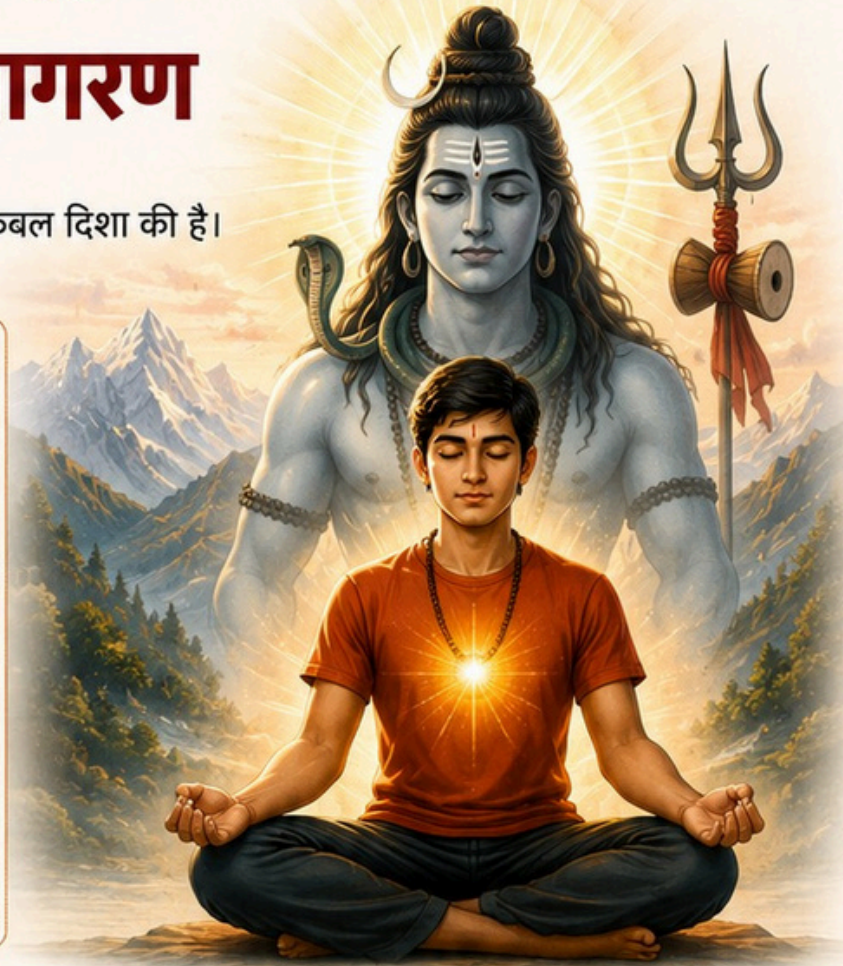
धैर्य देता है।



आत्मविश्वास देता है।



और जीवन का उद्देश्य देता है।



एक जागृत युवा सौ लोगों का भविष्य बदल सकता है।

नशामुक्ति और सकारात्मक जीवन

नशा केवल पदार्थ का नहीं होता —



नशा क्रोध का भी होता है।



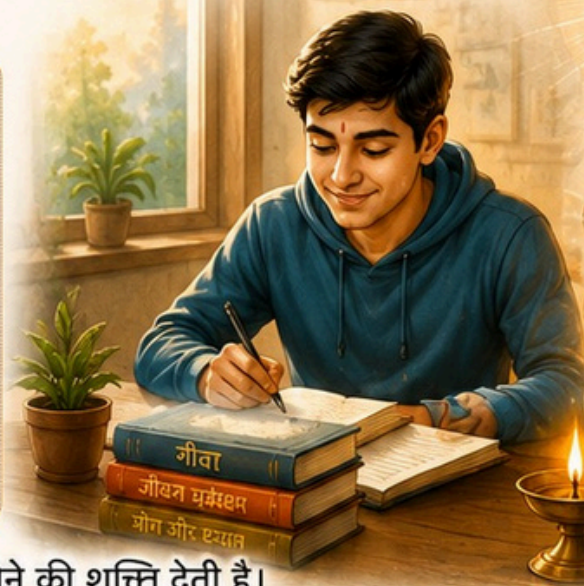
नशा अहंकार का भी होता है।



नशा मोबाइल का भी होता है।



नशा तुलना का भी होता है।



ॐ

शांति

स्वास्थ्य

आत्मविश्वास

सकारात्मकता

साधना मनुष्य को इन सब बंधनों से मुक्त होने की शक्ति देती है।

जब भीतर आनंद जागता है,
तो बाहरी नशों की आवश्यकता कम हो जाती है।



विचार से व्यवस्था तक

कोई भी व्यवस्था अचानक नहीं बनती।
हर व्यवस्था की शुरुआत एक विचार से होती है।



विचार → व्यवहार



व्यवहार → चरित्र



चरित्र → संस्कृति



संस्कृति → व्यवस्था



यदि विचार बदलेंगे — तो व्यवस्था अवश्य बदलेगी।



आत्मजागरण से राष्ट्रजागरण

राष्ट्र केवल भूमि का टुकड़ा नहीं है। राष्ट्र एक चेतना है।



जब व्यक्ति जागता है → परिवार जागता है।



जब परिवार जागता है → समाज जागता है।



जब समाज जागता है → राष्ट्र जागता है।



तभी राष्ट्र महान बनता है।



इसलिए आत्मजागरण ही राष्ट्रजागरण का आधार है।



मेरा साधना संकल्प

मैं संकल्प लेता हूँ कि —
प्रतिदिन कम से कम

१०८ बार

ॐ ॐ नमः शिवाय

का जप करूँगा।



◆ मैं सकारात्मकता फैलाऊँगा।



◆ मैं परिवार में सद्भाव बढ़ाऊँगा।



◆ मैं नशामुक्ति और चेतना जागरण का संदेश दूँगा।



यदि विचार बदलेंगे — तो व्यवस्था अवश्य बदलेगी।






अखंड पंचाक्षरी जाप साधना अभिलेख

मेरा साधना संकल्प एवं अनुभव

ॐ



 नाम : _____

 ग्राम / नगर : _____


 जनपद : _____

 मोबाइल : _____

मेरी प्रथम एक दिवसीय अखंड पंचाक्षरी जाप साधना

 तिथि : _____

 स्थान : _____

 परिवार के सदस्यों की संख्या : _____

अब तक आयोजित साधनाओं की संख्या



1 बार

2-5 बार

6-10 बार

11-15 बार

16+ बार

कुल संख्या : _____



साधना के दौरान विशेष अनुभूतियाँ





साधना के पश्चात जीवन में अनुभव किए गए परिवर्तन



मानसिक शांति



सकारात्मक सोच



क्रोध में कमी



एकाग्रता में वृद्धि



पारिवारिक सहोर्द



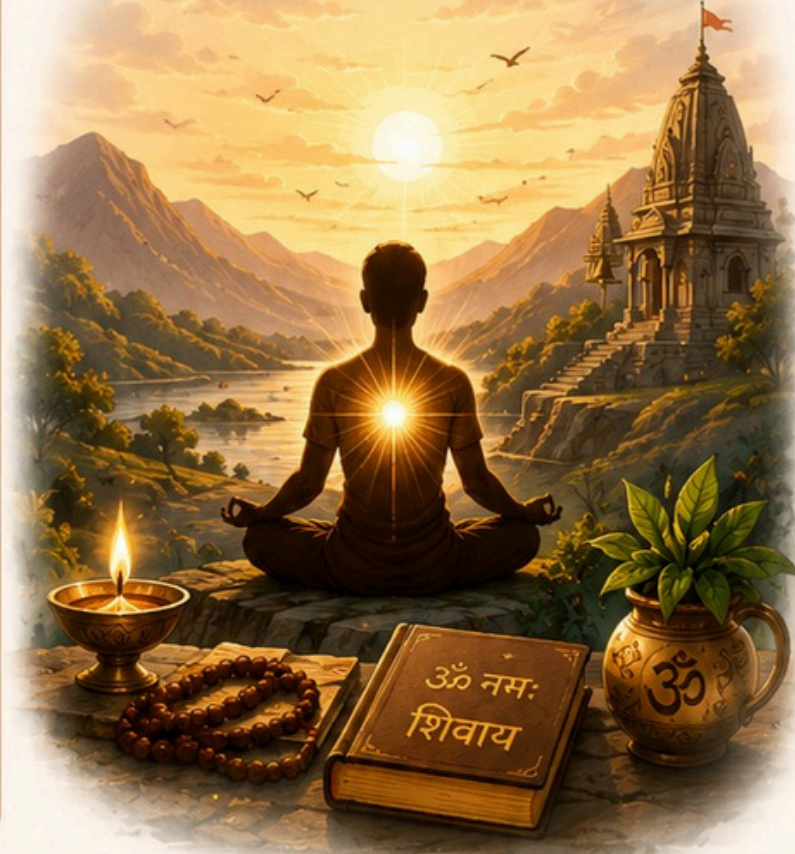
आध्यात्मिक रुचि



आत्मविश्वास में वृद्धि



अन्य _____



मेरा आगामी संकल्प



अपने परिवार में पुनः एक दिवसीय अखंड पंचाक्षरी जप साधना आयोजित करूँगा/करूँगी।

अन्य परिवारों को भी इस अभियान से जोड़ूँगा/जोड़ूँगी।

प्रतिदिन "ॐ नमः शिवाय" का नियमित जप करूँगा/करूँगी।



साधक हस्ताक्षर : _____



तिथि : _____ / _____ / _____



संपर्क

अभियान से जुड़ें

◆ ॐ ◆

अखंड पंचाक्षरी जाप साधना

कबीर जी महाराज के नेतृत्व में

Website : kabeerjimaharaj.com

संपर्क : +91-6394480317



"हर परिवार — एक दिवसीय अखंड पंचाक्षरी जाप साधना"

◆ ॐ ◆



भारत शक्ति संघ (BHARAT
SHAKTI SANGH)

WhatsApp group



इस QR कोड को WhatsApp कैमरा से स्कैन करें
और समूह से जुड़ें।

ॐ

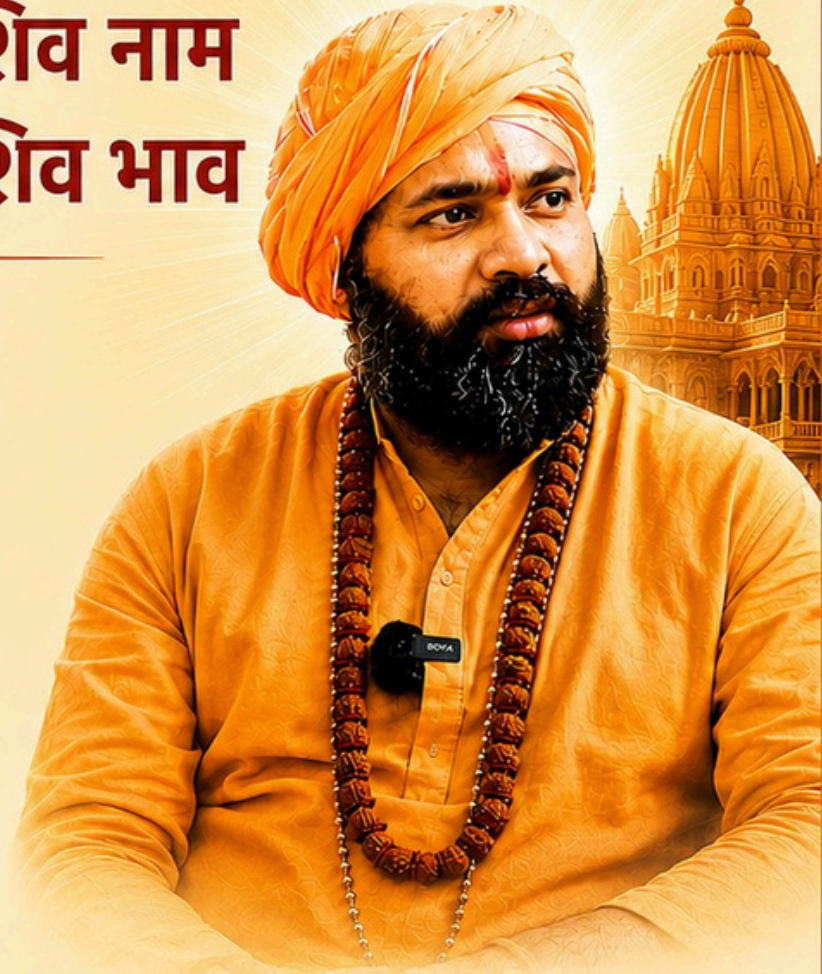
हर घर में शिव नाम हर मन में शिव भाव



**BHARAT
SHAKTI
SANGH**

विचार से व्यवस्था तक

अखंड पंचाक्षरी जाप साधना एक दिव्य आध्यात्मिक अभियान है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक परिवार, प्रत्येक समाज और समस्त राष्ट्र में शिव चेतना का जागरण करना है। विचार से व्यवस्था तक, व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज और समाज से राष्ट्र निर्माण की यह एक पवित्र साधना है!



हमारा उद्देश्य



आत्मजागरण
से राष्ट्रजागरण



परिवार से संस्कार,
संस्कार से संस्कृति



शिव चेतना से
एकात्म भारत



युवा सशक्तिकरण
एवं चरित्र निर्माण



समाज में सद्भाव,
सेवा और सहयोग



सनातन वैदिक संस्कृति
का पुनर्जागरण

एक मंत्र,
एक संकल्प,
एक साधना –
एक दिव्य परिवर्तन।

- कबीर जी महाराज

संपर्क करें



Website : bharatshaktisangh.org



Website : kabeerjimaharaj.com



Call / WhatsApp : +91 6394480317



हमारे WhatsApp
समूह से जुड़ें

QR को स्कैन करें

ISBN 978-93-98456-78-1



9 789398 456781

